अध्याय 3. श्यामाचरण दुबे : उपभोक्तावाद की संस्कृति

प्रश्न - 1. लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : लेखक के अनुसार, जीवन में 'सुख' का अभिप्राय केवल उपभोग सुख नहीं है।अन्य प्रकार के मानसिक, शारीरिक और सूक्ष्म आराम भी 'सुख' कहलाते हैं।परंतु आजकल लोग केवल उपभोग सुख को 'सुख' कहने लगे हैं।

प्रश्न - 2. आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

उत्तर : आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को पूरी तरह प्रभावित कर रही है।हम वही खाते-पीते और पहनते-ओढ़ते हैं जो आज के विज्ञापन कहते हैं।उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हम धीरे-धीरे उपभोगों के दास बनते जा रहे हैं।हम अपनी जरूरतों को अनावश्यक रूप से बढ़ाते जा रहे हैं। कई लोग तो केवल दिखावे के लिए महँगी घड़ियाँ, कंप्यूटर आदि खरीद रहे हैं।प्रतिष्ठा के नाम पर हम पाँच सितारा संस्कृति के गुलाम होते जा रहे हैं।
इस संस्कृति का सबसे बुरा प्रभाव हमारे सामाजिक सरोकारों पर पड़ रहा है।हमारे सामाजिक संबंध घटते जा रहे हैं।मन में अशांति और आक्रोश बढ़ रहे हैं।विकास का लक्ष्य दूर होता जा रहा है।हम जीवन के विशाल लक्ष्य से भटक रहे हैं।सारी मर्यादाएँ और नैतिकताएँ टूट रही हैं।मनुष्य स्वार्थ-केंद्रित होता जा रहा है।

प्रश्न - 3. लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?

उत्तर : लेखक सामाजिक मर्यादाओं तथा नैतिकता के पक्षधर थे।वे सादा जीवन, उच्च विचार के कायल थे।वे चाहते थे कि समाज में आपसी प्रेम और संबंध बढ़ें।लोग संयम और नैतिकता का आचरण करें।उपभोक्तावादी संस्कृति इस सबके विपरीत चलती है।वह भोग को बढ़ावा देती है और नैतिकता तथा मर्यादा को तिलांजलि देती है।गाँधी जी चाहते थे कि हम भारतीय अपनी बुनियाद पर कायम रहें, अर्थात् अपनी संस्कृति को न त्यागें।परंतु आज उपभोक्तावादी संस्कृति के नाम पर हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को भी मिटाते जा रहे हैं।इसलिए उन्होंने उपभोक्तावादी संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती कहा है।

प्रश्न - प्रश्न 4. आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न - (क) जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

उत्तर : उपभोकायादी संस्कृति का प्रभाव आयंत सूक्ष्म है।इसके प्रभाव में आकर हमारा चरित्र बदलता जा रहा है।उत्पातों का उपभोग करते-करते उनके गुलाम होते जा रहे हैं।यहाँ तक कि हम जीवन का लक्ष्य ही उपभोग करना ता है।हम उत्पादों का उपभोग नहीं करतो. बल्कि उत्पाद हमारे जीवन का भोग कर रहे हैं।

प्रश्न - (ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हो।

उत्तर : सामाजिक प्रतिष्ठा अनेक प्रकार की होती है।प्रतिष्ठा के कई रूप तो बिल्कुल विचित्र होते हैं।उनके कारण हँसी के पात्र बन जाते हैं।जैसे, अमरीका में लोग मरने से पहले अपनी समाधि का प्रबंध करने लगे हैं।ये धन देकर यह सिु करते है उनकी समाधि के आसपास सदा हरियाली रहेंगी और मनमोहक संगीत बजता रहेगा।